E content of History, B.A. Hons. 2nd yr.
Paper III (History of India - 1206-1757 AD)
From — Poonam Choudhury, Chief Coordinator History, N.O.U.

Q.) What do you know about the 'Condition of Slaves' and the 'Position of Women' in medieval India. Discuss.
मध्यकालीन भारत में दासों की स्थिति एवं महिलाओं की स्थिति के विषय में आप क्या जानते हैं? विवेचना कीजिए

Ans.) दास - प्रथा (Slavery)

सम्पूर्ण मध्यकाल में दास रखने की प्रथा थी। हिन्दू तथा मुसलमान दोनों ही अपने सामर्थ्य के अनुसार दास रखते थे। स्त्री तथा पुरुष दोनों ही दास होते थे। इनसे मुख्यतः शारीरिक कार्य लिया जाता था जैसे - घर का काम - काज करना, खेती - बारी करना, सामान लाना, व्यापार में सहयोग करना आदि। यद्यपि प्रारम्भ में इनकी स्थिति अच्छी थी। इनमें अनेक योग्य प्रशासक भी हुए। जैसे - कुतुबुद्दीन ऐबक, इल्तुतमिश, बलबन आदि। परन्तु बाद में इनकी स्थिति दिन पर दिन बदतर होती चली गयी। बाद में इनका कार्य नौकरों जैसा हो गया। ये घर के काम - काज तक ही सीमित हो गये। सुन्दर स्त्री दासों को शारीरिक उपभोग के लिए भी रखा जाता था। हिन्दुओं की अपेक्षा मुसलमानों के बीच यह प्रथा ज्यादा लोकप्रिय थी।

स्मृतियों में दासों के पन्द्रह प्रकार बताये गये हैं, जिनमें प्रमुख निम्न थे - क्रीत - दास अर्थात खरीदा हुआ दास, लब्धदास - यानी दान या भेंट में मिला दास, युद्ध - प्राप्त दास अर्थात युद्ध में बन्दी बनाये हुए दास, आत्म विक्रेता दास अर्थात किसी मजबूरी में अपने स्वयं दास के रूप में

आपको बेच दे, ऋण दास अर्थात् कर्ज नहीं चुकाने की स्थिति में बना हुआ दास, खाना-जात दास यानी घर की दासी से उत्पन्न दास, अनाकाल भृत अर्थात् अकाल के समय में परिस्थिति से बाध्य होकर बना हुआ दास, प्रायश्चित-दास आदि। मुसलमानों में प्रायः प्रथम घर-क्रीत दास, खाना-दास, युद्ध-प्राप्त दास एवं आत्म विक्रेता-दास ही हुआ करते थे।

पूरे मध्यकाल में दासों की संख्या काफी थी। अलाउद्दीन के पास 50,000 गुलाम थे। फिरोज तुगलक के काल में इनकी संख्या बढ़कर 1,80,000 हजार हो गयी। यही कारण था कि इनके लिए 'दीवान-ए-बन्दगान' नामक एक अलग विभाग की स्थापना की गयी। इनकी स्थिति बाद में बदतर होती चली गयी।

दास-दासियों की बाजार लगती थी एवं जानवरों की भाँति इनका क्रय-विक्रय होता था। दासों का तुर्किस्तान अफ्रीका आदि देशों से भारत में आयात होता था। उपहार के रूप में भारत से अच्छे-अच्छे दास बाहर भी भेज दिए जाते थे। भारतीय दासों में असम के दासों का महत्व उनकी शारीरिक शक्ति के कारण अधिक था। यही कारण था कि गुणवत्ता के आधार पर उनका मूल्य अधिक था। शाही हरम में भी एक विशिष्ट प्रकार के दासों की नियुक्ति होती थी। इन्हें बाल्यावस्था में ही लाकर इनका लालन-पालन किया जाता था। ये हिजड़े होते थे। तेरहवीं शताब्दी में बंगाल तथा मलाया से काफी संख्या में हिजड़ों का व्यापार किया जाता था।

सुल्तान बड़ी संख्या में दास रखते थे। उनकी

उनकी स्थिति उपेक्षाकृत अच्छी थी। जिन स्त्री दासों को सहवास के लिए रखा जाता था, उनकी स्थिति अपेक्षाकृत अच्छी होती थी। कभी कभी तो गृहस्वामिनी से भी अधिक उन्हें सम्मान दिया जाता था। सहवास के लिए सुन्दर दासियाँ चीन और तुर्किस्तान से भी लाई जाती थीं। दास सामान्यतः सुल्तान, अमीर, सरदार, वरिष्ठ अधिकारीगण हिन्दू राजा, सामन्त राजपूत सरदार आदि के द्वारा बड़ी संख्या में रखे जाते थे।

हिन्दुओं की अपेक्षा मुस्लिम समाज में दासों की स्थिति अपेक्षाकृत अच्छी थी। मुस्लिम समाज में यदि घर की दासी से गृहस्वामी द्वारा उत्पन्न सन्तान हो तो दोनों ही दासता से मुक्त हो जाते थे। दासी को पत्नी तथा उससे उत्पन्न सन्तान को पुत्र या पुत्री का स्थान प्राप्त हो जाता था।

दासों को स्वामी की आज्ञा माननी पड़ती थी। उसे कहीं आने-जाने की स्वतंत्रता नहीं थी। दास की मृत्यु के पश्चात उसके द्वारा अर्जित सम्पत्ति का उत्तराधिकारी उसका स्वामी होता था। चाहे हिन्दू समाज हो या मुसलमान दोनों ही समाज में कुछ विशेष परिस्थिति में दासों को स्वतंत्र कर देने का नियम था। स्वतंत्रता देते समय हिन्दू स्वामी दास के लिए सिर पर से पानी का घड़ा उतारकर फोड़ देता था और उसके बाद चावल फेंकते हुए तीन बार कहता — "अब तू दास नहीं है।" इस प्रकार वह दास स्वतंत्र हो जाता था। मुस्लिम समाज में दासों को लिखित स्वतंत्रता-पत्र देने की परिपाटी थी। चाहे जो भी हो मध्यकालीन समाज की यह एक बहुत बड़ी मानवीय कुरीति थी जो दोनों ही समाज - हिन्दू और मुस्लिम समाज में व्याप्त थी।

समाज में स्त्रियों की स्थिति
(Women's Position in Society)

मध्यकालीन समाज में स्त्रियों को वह स्थान प्राप्त नहीं था जो प्राचीन काल में हिन्दुओं ने नारियों को दिया था। वह अमीरों के घर में केवल भोग-विलास की सामग्री बन कर रह गयी थी। मध्यकाल में स्त्रियों की स्थिति को ठीक से समझने के लिए हिन्दू समाज एवं मुस्लिम समाज में स्त्रियों की क्या स्थिति थी, अलग-अलग ढंग से विचार करना अनिवार्य होगा।

Scanned with CamScanner

हिन्दू समाज में स्त्रियों की स्थिति – प्राचीन काल की तुलना में मध्यकाल में स्त्रियों की स्थिति में गिरावट आयी। फिर भी हिन्दू समाज में उन्हें आदर की दृष्टि से देखा जाता था। पारिवारिक कार्यक्रम और धार्मिक अनुष्ठानों में उनका सहयोग अनिवार्य था। उच्च घराने की स्त्रियाँ शिक्षा भी प्राप्त करती थीं। यही कारण था कि इस युग में अनेक विदुषी हिन्दू महिलायें हुईं। देवलरानी, रूपमती पद्मावती, मीराबाई, मध्यकालीन भारत की प्रसिद्ध नारियाँ हुई। स्त्रियाँ नृत्य, संगीत तथा चित्रकला में भी दक्ष होती थीं। निम्न वर्ग तथा गाँवों में रहने वाली स्त्रियों के बीच शिक्षा का अभाव था और वे अधिकांश समय कृषि तथा घरेलू कार्यों में ही व्यतीत करती थीं।

इस काल में मुसलमानों के आगमन एवं उनकी कामुकता के कारण बाल-विवाह के साथ-साथ समाज में अन्य अनेक बुराइयाँ आ गयीं। इनमें बहुविवाह, पर्दा-प्रथा, सती-प्रथा, दहेज आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। राजघराने के लिए सामन्त-वर्ग के लोग तथा धनी व्यक्ति एक से अधिक स्त्रियों से विवाह करते थे। उनके लिए स्त्रियाँ इन्द्रिय सुखों का साधन मात्र थीं। बहुविवाह के चलते समाज में स्त्रियों का मान घटने लगा।

इस काल में मुसलमानों ने सुन्दर-सुन्दर युवतियों से विवाह करना प्रारम्भ कर दिया। इससे हिन्दुओं का धर्म नष्ट होता था। मुसलमान आक्रमणकारियों से अपनी कन्याओं की रक्षा के लिए हिन्दुओं ने बाल्यकाल में ही अपनी कन्याओं की शादी करनी शुरू कर दी। इस प्रकार इस काल में हिन्दू समाज में बाल-विवाह की कुप्रथा का आरम्भ हुआ जिससे सदियों हिन्दू समाज त्रस्त रहा।

Scanned with CamScanner

पत्रांक .....

इस प्रकार मुसलमानों से अपनी कन्याओं को बचाने के प्रयास से पर्दा-प्रथा का भी प्रचलन शुरू हुआ। यह प्रथा सिर्फ उच्च एवं मध्य वर्ग तक ही सीमित रहा। निम्न वर्ग की स्त्रियाँ जिन्हें अपनी जीविकोपार्जन के लिए आर्थिक कार्यों में अपने पति का हाथ बँटाना पड़ता था, पर्दा-प्रथा के दुर्गुणों से मुक्त रहीं। स्त्री-समाज के पतन में इस प्रथा का बहुत बड़ा हाथ है।

सती-प्रथा भी हिन्दू समाज की एक बड़ी कुरीति थी। पति की मृत्यु के बाद पत्नी को पति की चिता के साथ जलना पड़ता था। यद्यपि यह प्रथा हिन्दुओं में प्राचीन काल से ही प्रचलित थी, परन्तु मध्यकाल में इसमें और तीव्रता आ गयी। इसका प्रमुख कारण यह था कि विधवाओं को मुसलमानों में अपने सतीत्व का भय बना रहता था। यह प्रथा भी उच्च वर्ग एवं मध्यम वर्ग तक ही सीमित था। कभी-कभी तो स्त्रियों को बलपूर्वक सती बना दिया जाता था।

जौहर-प्रथा हिन्दू समाज की एक अन्य कुरीति थी। राजपूत स्त्रियों को यह आशा रहती थी कि उनके पतियों को लड़ाई में विजय प्राप्त होगी तो वे अपने सतीत्व की रक्षा के लिए सामूहिक रूप से चिता में जलकर अपने प्राणों की आहुति दे देती थीं। इस प्रथा को जौहर प्रथा कहा जाता था।

Scanned with CamScanner

Page 6

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि मध्यकाल में हिन्दू - स्त्री की सामाजिक स्तर में गिरावट आयी थी। वे अपने घरों से बाहर नहीं निकल सकती थीं। समाज में अनेक बुराइयाँ आ गयीं समाज में अब उनका पूर्ववत सम्मान नहीं रहा। आत्मरक्षा के कारण उनका कार्यक्षेत्र अब घर की चाहरदीवारी तक ही सीमित हो गया। इसकाल में वे शिक्षा के अधिकार से भी वंचित रहीं।

मुस्लिम समाज में स्त्रियों की स्थिति - इस काल में मुस्लिम परिवार की स्त्रियों की स्थिति और भी दयनीय थी। दासियों के साथ अनुचित सम्बन्ध होने के कारण पत्नी और दासी के कोई विशेष अन्तर नहीं रहता था। बहुविवाह की प्रथा मुस्लिम समाज में विशेष रूप से प्रचलित थी। सुल्तान और सामन्तों के हरम में सैकड़ो की संख्या में स्त्रियाँ रहती थीं। उनमें पर्दे की प्रथा काफी प्रचलित थी। यहाँ तक कि अनेक सुल्तानों ने उन्हें संतों के दरगाहों पर भी जाने से मना कर रखा था।

परन्तु अनेक क्षेत्रों में उन्हें कुछ सुविधाएँ मिली हुई थीं। अपने पति से वे किसी कारणवश तलाक ले सकती थीं। दूसरी शादी या विधवाएँ विवाह कर सकती थीं। उनको पिता की सम्पत्ति पर अधिकार था। पर्दा प्रथा के बावजूद भी शाही घर की लड़कियाँ शिक्षित होती थीं। रजिया बेगम प्रथम मुस्लिम सुल्तान बनी। नूरजहाँ मुमताजमहल, चाँद बीबी, जहाँआरा, रोशन आर

Scanned with CamScanner

Page 7

आरा, शाहबजी उस युग की महान मुस्लिम महिलायें थीं। फर्रुखसियर की माँ कूटनीति में दक्ष थीं तथा अलीवर्दी खाँ की बेगम भी उसे राजनीति के परामर्श दिया करती थीं।

समाज में वेश्याओं का भी एक अलग वर्ग था। हिन्दू और मुसलमान दोनों वर्ग की वेश्यायें थीं। वेश्यायें गाने-बजाने के अतिरिक्त अपने सहवास से भी लोगों का मन बहलाया करती थीं।

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि मध्यकाल में स्त्रियों की स्थिति देश में प्राचीन काल की अपेक्षा गिरी।

उपसंहार / ...

Scanned with CamScanner